सितम्बर 2016

वर्ष 29 द्वितीय अंक

सामान्य ज्ञान दर्पण

इस अंक में...

9 'मन' ही पथभ्रष्ट बनाता है न कि शत्रु

विशेष स्तम्भ

10 समसामयिक सामान्य ज्ञान
17 आर्थिक परिदृश्य
22 राष्ट्रीय परिदृश्य
27 अन्तर्राष्ट्रीय परिदृश्य
31 31वें ओलम्पिक खेलों का शुभारम्भ
33 क्रीड़ा जगत्
35 समसामयिक महत्वपूर्ण तथ्य
36 अनुप्रेरक युवा प्रतिभाएं
38 विज्ञान समाचार
40 सारभूत तत्व कोष

लेख

44 आर्थिक लेख—भारत में समावेशी विकास व कृषि
46 संचार तकनीकी जानकारी—बायोमैट्रिक : परिचय एवं उपयोगिता
47 द्विपक्षीय सम्बन्ध—नए पड़ाव पर भारत-ईरान सम्बन्ध
48 परमाणु आतंकवाद—परमाणु सुरक्षा सम्मेलन
49 कृषि लेख—मृदा प्रदूषण : दुष्प्रभाव व नियन्त्रण
51 बैंकिंग क्षेत्र में रोजगार का मौका—आईबीपीएस द्वारा आयोजित बैंक प्रोबेशनरी अधिकारी परीक्षा, 2016 हेतु

हल प्रश्न-पत्र

53 झारखण्ड डाक विभाग पोस्टमैन/मेल गार्ड परीक्षा, 2016
60 स्टेट बैंक ऑफ इण्डिया लिपिकीय संवर्ग (प्रा.) परीक्षा, 2016
69 उत्तर प्रदेश ग्राम विकास अधिकारी परीक्षा, 2016
74 एस.एस.सी. केन्द्रीय सशस्त्र पुलिस बल/दिल्ली पुलिस सब-इंस्पेक्टर परीक्षा, 2016
89 मध्य प्रदेश लोक सेवा आयोग स्टेनो-टाइपिस्ट/सहायक ग्रेड-III परीक्षा, 2015

उत्तराखण्ड वन आरक्षी (हल्द्वानी) खुली भर्ती परीक्षा, 2015

95 सामान्य ज्ञान व हिन्दी
97 सामान्य गणित
102 दिल्ली अधीनस्थ सेवा चयन बोर्ड टीजीटी परीक्षा, 2014
109 आगामी आर.ए.एस./आर.टी.एस. (प्रा.) परीक्षा हेतु विशेष हल प्रश्न
113 आगामी आई.बी.पी.एस. द्वारा आयोजित बैंक पी.ओ./एम.टी. प्रारम्भिक परीक्षा हेतु विशेष हल प्रश्न

विविध/सामान्य

123 विविध योजनाएं—आधारभूत संरचना, महिला सशक्तिकरण, सामाजिक क्षेत्र, आर्थिक क्षेत्र की योजनाएं /परियोजनाएं/कार्यक्रम : एक दृष्टि में सार
126 सामान्य जानकारी—पेय जल एवं स्वच्छता क्षेत्र में अनुसंधान, विकास, मिशन एवं प्रोग्राम्स के बढ़ते चरण-सिंहावलोकन
128 ज्ञान वृद्धि कीजिए
129 रोजगार समाचार

सामान्य ज्ञान दर्पण में प्रकाशित किसी भी सामग्री अथवा चित्र के लिए सम्पादक की सहमति होना आवश्यक नहीं है. —सम्पादक

• **E-mail :** publisher@pdgroup.in • **Website :** www.pdgroup.in

'मन' ही पथभ्रष्ट बनाता है न कि शत्रु

—साध्वी वैभवश्री 'आत्मा'

मनुष्य की सर्वोत्तम उपलब्धि या उसकी विशेषता यदि कुछ है तो वह है 'मन का होना'. प्राचीन ऋषि मनु कह गए कि 'मनगत् मनुष्य' अर्थात् मनन करने की क्षमता होने से हम मनुष्य हुए नहीं तो हम सभी पशु ही होते. पशु और मनुष्य में बहुत बड़ी भेद रेखा है तो मात्र इस मन के कारण. विकसित मन का स्वामी मनुष्य जब इसको सही दिशागामी नहीं बना पाता है तब वह स्वयं के मन को स्वयं का ही शत्रु बना डालता है. हममें से अधिकांश लोग अपने मन से परेशान रहते हैं. हमारा मन भी एक जिन्न की तरह है, भूत की तरह है, इसे सही दिशा दी जाए, इसका सदुपयोग किया जाए तो यह कठिन से कठिन काम को आसान बना देता है, कम समय में पूरा कर लेता है, किन्तु अगर इसका सही प्रयोग करना न आए तो यह हमारा ही शत्रु बन कर हमें ही डराने-सताने व खाने लगता है. मन की इस अनेकांत विशेषता को जानकर जो कोई इसका सदुपयोग कर लेता है, वह प्रज्ञावान दुनिया पर राज करता है. बेताज बादशाह बन जाता है

आओ, जानें मन कब मित्र हो सकता है व कब शत्रु ?

समण भगवान महावीर ने इस मन के बारे में कहा कि—

'अप्पा मित्तममित्तं च दुप्पट्ठिय सुप्पट्ठिओ ।।'

अर्थात् आप ही आपके शत्रु अथवा मित्र हैं. अगर आपका मन दुप्रतिष्ठित है तो वह आपका शत्रु है और यदि वह सुप्रतिष्ठित है तो वह हमारा मित्र है.

दुप्रतिष्ठित मन से तात्पर्य नकारात्मक व दुष्ट कल्पनाओं से भरे मन से है. जो मन स्वार्थी, आलसी व दुष्टता से भरा है, वह मन उस इंसान को पथभ्रष्ट बनाता रहेगा. ऐसा इंसान अपने मन के कारण सदा दुविधाग्रस्त व परेशान बना रहेगा. चंचल मन व्यक्ति किसी भी कार्य में एकाग्र व समर्पित नहीं हो पाता है, इसीलिए सफल भी नहीं हो पाता है. मन की सुविधा भोग की लालसाएँ मनुष्य से अपराध करवाती है. तन की जरूरतें तो सबकी ही सीमित हैं, वह तो दो रोटी, दो जोड़ी कपड़ा व एक आश्रय स्थान से तृप्त हो सकता है, किन्तु मन को सदा नूतन आइटम खाने में चाहिए, बढ़िया रंग-बिरंगे वसन-फैशन-साज़ो-सामान चाहिए. मन की लालसाओं का तो कहीं कोई अन्त ही नहीं है. उत्तराध्ययन सूत्र कहता है कि—

'इच्छा छु आगाससमा अणंता ।'

अर्थात् मन की इच्छाएँ आकाश सम अनन्त हैं. उनकी पूर्ति या तृप्ति सम्भव नहीं है. इसीलिए अपने मन को सँभालना और सम्यक् मार्गी बनाना मनुष्य मात्र का परम कर्तव्य है. भगवान महावीर कहते हैं कि 'युद्ध क्षेत्र में हजारों शत्रुओं को जीत लेना आसान है, किन्तु उसी वीर पुरुष द्वारा अपने मन को जीत पाना बहुत कठिन है.'